ओम् शान्ति 26-8-14 मधुबन

सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति गुल्जार दादी जी का याद पत्र

प्यारे-प्यारे बापदादा के नयनों में समाये हुए देश विदेश के सभी बाबा के बच्चों को

मधुबन बेहद घर से ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर यादप्यार स्वीकार हो।

बाद समाचार - आप सभी का रूहानी स्नेह सदा पहुंचता रहता है। चारों तरफ के भाई बहिनें बापदादा के साथ-साथ दादियों को भी बहुत प्यार से याद करते, अपने सन्देश भेजते रहते हैं। आप सबकी याद बाबा तक भी पहुंचती रहती है।

देखो - आजकल की मुरलियां कितनी सुखदाई हैं। हर मुरली में ऐसी विशेषता है जो दिल में कोई भी बात है उसका जवाब अर्थात् उसकी शिक्षा मुरली में आ जाती है क्योंकि हमारे दिल में बाबा की याद आती है तो बाबा को सब बच्चों के संकल्प पहुंच जाते हैं और रेसपान्ड मिल जाता है। यही बाबा की कमाल देख-देख दिल हर्षाती है और ऐसे ही अनुभव होता कि बापदादा दोनों हमारे साथ हैं और पालनहार हो हमारी पालना कर रहे हैं। ऐसी भासना बाबा दे रहा है कि मैं सदा बच्चों के साथ हूँ, बोलो, ऐसे अनुभव होता है ना! दिल में कोई भी संकल्प चलता तो फौरन उसका उत्तर बापदादा दे देता है, सिर्फ हमारी बुद्धि बाप की तरफ है तो सच यह अनुभव होता, इतना प्यार करेगा कौन! दिल गदगद होता रहता है। यह संगमयुग है ही विशेष बाप और बच्चों के रूहानी सम्बन्ध का, मिलन का युग। वह अनुभव कितना सहज अनुभव होता है, इसलिए दिल यही गीत गाता कि इतना प्यार करेगा कौन! बोलो, आप सबको भी यही अनुभव होता है ना!

तो संगमयुग की मौज़ों का अनुभव करते उड़ती कला में उड़ते चलो। सदा उमंग-उत्साह में रहते, अपने चेहरे और चलन द्वारा, सूरत मूर्त द्वारा बापदादा को प्रत्यक्ष करते चलो।

अच्छा - सभी को बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,

(बी.के. हृदयमोहिनी)